2026

MPPSC

MADHYA PRADESH

STATE FOREST SERVICE

मध्य प्रदेश का आधुनिक कालीन इतिहास

Module - 1

मध्यप्रदेश का इतिहास, संस्कृति एवं साहित्य : ◈ पूर्वमध्य काल और मध्य प्रदेश ◈ मध्य प्रदेश में राजपूत राजवंश ◈ मध्य प्रदेश में सल्तनत एवं स्वतंत्र मुस्लिम सत्ता ◈ गढ़ा का गोंड राज्य ◈ बुन्देला राजवंश ◈ बघेल वंश ◈ मध्य प्रदेश में मराठा गतिविधियां ◈ भोपाल रियासत

Hornbill Classes

MPPSC STATE FOREST SERVICE 2023

Rank – 1
Shashank Jain
Comprehensive Forestry Course + CIGP

Rank – 3
Jyoti Thakur
Comprehensive Forestry Course + CIGP

Rank – 4
Shivam Gautam
Comprehensive Interview Guidance Programme

Rank – 5
Nitin Patel
Comprehensive Forestry Course + CIGP

Rank – 6
Ravi Kumar
Comprehensive Interview Guidance Programme + Test Series

Rank – 7
Ankur Gupta
Comprehensive Forestry Course

Rank – 8
Deependra Lodhi
Comprehensive Interview Guidance Programme

Rank – 9
Kapil Chauhan
Comprehensive Forestry Course

Rank – 10
Alok Kumar Jhariya
Comprehensive Forestry Course + CIGP

Rank – 11
Tarun Chouhan
Comprehensive Interview Guidance Programme + Test Series

Rank - 12
Raghvendra Thakur
Comprehensive Forestry Course + Test S. + CIGP

11 *Out of* **12** *Total Selections in*
Assistant Conservator of Forest (ACF) 2023

108 *Out of* **126** *Total Selections in*
Range Forest Officer (RFO) 2023

Rank – 1
Arvind Ahirwar
Comprehensive Interview Guidance Programme + Test Series

Rank – 2
Pushpendra Singh Ahirwar
Comprehensive Forestry Course + CIGP

Rank – 3
Narendra Gunare
Comprehensive Interview Guidance Programme + Test Series

Rank – 4
Jitendra Kumar Verma
Comprehensive Forestry Course + CIGP

Rank – 5
Jaishrish Barethiya
Comprehensive Forestry Course + CIGP

Rank – 6
Bhavna Sehariya
Comprehensive Forestry Course + CIGP

Rank – 7
Pradeep Ahirwar
Comprehensive Forestry Course + CIGP

Rank – 8
Anil Kumar Gour
Comprehensive Forestry Course + CIGP

Rank – 9
Aakash Kumar Malviya
Comprehensive Forestry Course + CIGP

Rank - 11
Rajesh Kumar Jatav
Comprehensive Forestry Course + CIGP

Rank - 12
Veerendra Prajapati
Comprehensive Interview Guidance Programme + Test Series

Rank - 13
Dinesh Kumar
Test Series

Rank - 14
Niranjan Dehariya
Comprehensive Forestry Course + CIGP

Rank - 15
Abhinay Chouhan
Test Series

Rank - 18
Sher Singh Ahirwar
Comprehensive Forestry Course + CIGP

Rank - 19
Pradeep Jatav
Comprehensive Forestry Course + CIGP

Rank - 21
Amit Sisodiya
Comprehensive Interview Guidance Programme

Rank - 22
Abhishek Barodiya
Comprehensive Interview Guidance Programme

Rank - 24
Golu Goyal
Comprehensive Interview Guidance Programme + Test Series

Rank - 25
Pawan Raje
Comprehensive Interview Guidance Programme + Test Series

मध्य प्रदेश का आधुनिक इतिहास

MODULE – 1

Hornbill classes

EDITION : 2026

+917223970423 Hornbillclasses.com

Gole ka mandir, Morar, Gwalior (MP) 474005

Module - 1

SYLLABUS

Unit	Syllabus
MPPSC (Pre) Unit - 2	**History, Culture and Literature of Madhya Pradesh** : Contribution of Madhya Pradesh in Freedom Movement. **मध्यप्रदेश का इतिहास, संस्कृति एवं साहित्य** : स्वतंत्रता आंदोलन में मध्यप्रदेश का योगदान।
MPPSC Forest (Main) Section (A) Unit - 1	**History of Madhya Pradesh** : Modern History of Madhya Pradesh. Freedom Movement in Madhya Pradesh. **मध्यप्रदेश का इतिहास :** मध्यप्रदेश का आधुनिक इतिहास। मध्यप्रदेश में स्वतंत्रता आंदोलन।

INDEX

मध्य प्रदेश का मध्यकालीन इतिहास		
1.	आधुनिक मध्यप्रदेश : परिचय एवं प्रारम्भिक विद्रोह	1 – 3
2.	1857 की क्रांति एवं मध्यप्रदेश	4 – 15
3.	मध्यप्रदेश में राष्ट्रवाद का उदय	16 – 20
4.	मध्यप्रदेश में स्वाधीनता आंदोलन : प्रथम चरण	21 – 27
5.	मध्यप्रदेश में स्वाधीनता आंदोलन : अंतिम चरण	28 – 34
	MCQs	35 – 38

वैधानिक चेतावनी

यह पुस्तक व सामग्री आपके व्यक्तिगत उपयोग के लिये प्रदान की गई है और इसे आपके व्यक्तिगत Contact No. से Watermark किया गया है। इस पुस्तक को किसी अन्य व्यक्ति / संस्था / समूह के साथ साझा करना, फोटो कॉपी कराना आदि पूर्णत: वर्जित है, यदि आप इस प्रकार की किसी भी गतिविधि में सम्मिलित पाये जाते हैं, तो ऐसी स्थिति में आपका Registration समाप्त कर दिया जायेगा और आपके विरूद्ध उचित दण्डात्मक कार्यवाही की जायेगी।

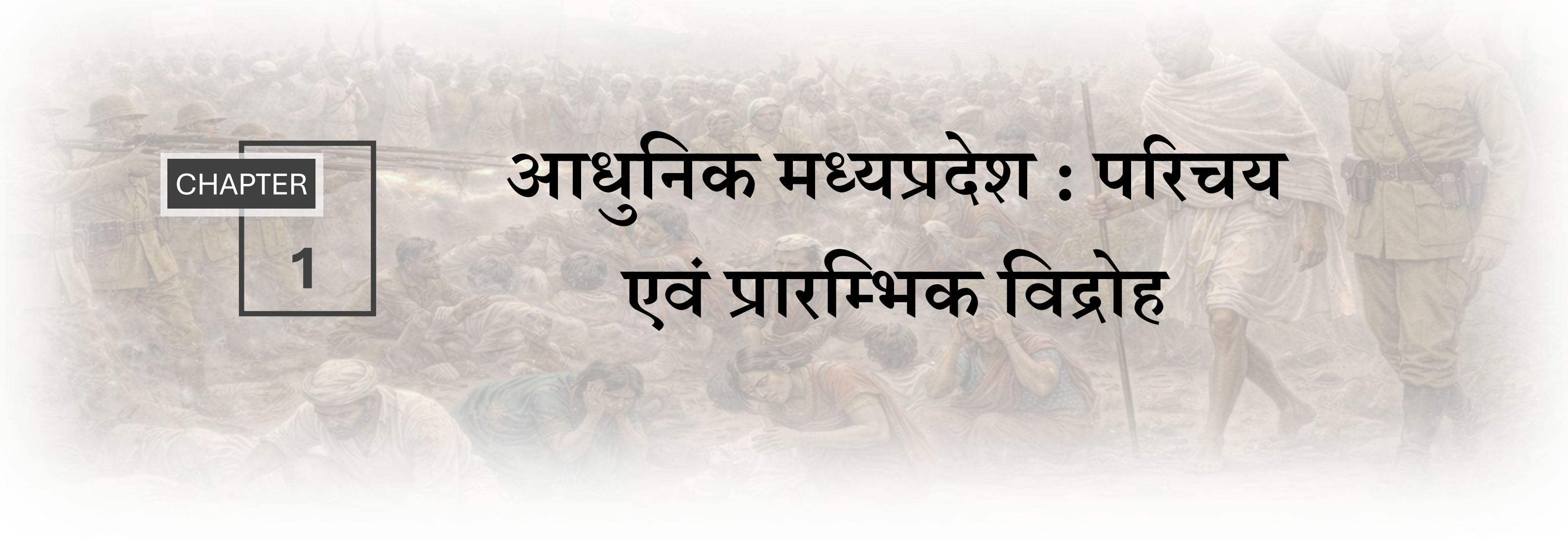

CHAPTER 1

आधुनिक मध्यप्रदेश : परिचय एवं प्रारम्भिक विद्रोह

आधुनिक कालीन मध्यप्रदेश का इतिहास अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से आरम्भ होकर स्वतंत्रता और राज्य पुनर्गठन तक की जटिल राजनीतिक प्रक्रियाओं से निर्मित हुआ है। इस कालखंड की पृष्ठभूमि में **मराठा शक्ति का उत्कर्ष और उसके पश्चात उसका क्रमिक पतन** विशेष रूप से उल्लेखनीय है। पानीपत के तृतीय युद्ध के बाद **मराठा साम्राज्य की केंद्रीय शक्ति कमजोर** होती गई। यद्यपि सिंधिया, होल्कर और भोंसले जैसे सरदारों ने मध्यभारत में अपना प्रभाव बनाये रखा; परंतु आंतरिक संघर्षों, उत्तराधिकार विवादों तथा अंग्रेजों से हुये युद्धों ने मराठा प्रभुत्व को क्षीण कर दिया। परिणामस्वरूप 1818 ईस्वी तक मध्यभारत के **व्यापक भूभाग पर अंग्रेजी सत्ता स्थापित** हो गई।

ब्रिटिश विजय के साथ प्रशासनिक पुनर्गठन प्रारंभ हुआ और मध्यप्रदेश का क्षेत्र विभिन्न प्रांतों एवं रियासतों में विभाजित रहा, जिनमें सेंट्रल प्रोविंसेज, बरार, सागर-नर्मदा क्षेत्र तथा मध्यभारत एजेंसी प्रमुख थे। अंग्रेजी शासन के **आर्थिक शोषण और सामाजिक हस्तक्षेपों** के कारण लोगों में असंतोष निरंतर बढ़ता गया। परिणाम स्वरूप पूरे मध्यप्रदेश में **विद्रोहों की एक शृंखला** चल पड़ी, जिसकी परिणति **1857 के महान विद्रोह** के रूप में दिखाई दी।

बीसवीं शताब्दी में राष्ट्रीय आंदोलन के प्रभाव से मध्यप्रदेश भी अछूता नहीं रहा। असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान यहां के नगरों और रियासतों में व्यापक जनसक्रियता देखी गई, साथ ही **अनेक नये आंदोलनों**, जैसे – झण्डा सत्याग्रह, जंगल सत्याग्रह आदि, का **सूत्रपात मध्यप्रदेश से** ही हुआ। अंततः देश की स्वतंत्रता के साथ मध्यभारत की रियासतों का भारतीय संघ में विलय प्रारंभ हुआ और 1956 के राज्य पुनर्गठन अधिनियम के अंतर्गत महाकौशल, मध्यभारत, विंध्यप्रदेश और भोपाल को मिलाकर वर्तमान मध्यप्रदेश का गठन किया गया।

1.1 अंग्रेज सत्ता के विरुद्ध प्रारम्भिक विद्रोह

आधुनिक कालीन मध्यप्रदेश के प्रारंभिक विद्रोह मराठा साम्राज्य पर ब्रिटिश आधिपत्य स्थापित होने की पृष्ठभूमि से जुड़े हुये हैं। लॉर्ड हैस्टिंग्स के काल में 1817 ई. में **पूना की संधि** संपन्न हुई, जिसके परिणामस्वरूप **पेशवा बाजीराव द्वितीय की सत्ता समाप्त** हो गई तथा सागर और दमोह पर अंग्रेजों का अधिकार स्थापित हो गया। इसके पश्चात 1818 ई. में जनरल मार्शल ने विनायक राव को पराजित किया, जिससे मराठा शक्ति का पतन और अधिक स्पष्ट हो गया। हालांकि, इस संधि के बाद भी पेशवा ने कुछ छुटपुट आक्रमण, जैसे – 1818 में अष्टि का युद्ध, अंग्रेजों पर किये पर उन्हें निर्णायक सफलता प्राप्त नहीं हुई।

अप्पाजी भोसले

मराठा पराभव के बाद भी कुछ शासकों ने अंग्रेजों के विरुद्ध प्रतिरोध का मार्ग अपनाया। नागपुर के राजा अप्पाजी भोसले ने **1817 ई. में पेशवा से खिलअत एवं जरीपट्टा प्राप्त** करके अंग्रेजों के विरुद्ध विरोध प्रारंभ किया। इस प्रतिरोध की परिणति **26/27 नवंबर 1818 को सीताबर्डी के युद्ध** के रूप में हुई, जिसमें **अरब पल्टन*** ने रेसीडेंसी क्षेत्रों में गोलीबारी की और कैप्टन सैडलर, जार्ज साउथबी तथा अन्य अधिकारियों का वध कर दिया तथा वे **अंग्रेजों के तोपखाने को छीनने में भी सफल** रहे। किंतु बाद में कैप्टन फिट्ज़ेरल्ड की सहायता से अंग्रेजों ने स्थिति पर नियंत्रण स्थापित किया और भोसले पराजित हो गये, जिसके परिणामस्वरूप मण्डला, बैतूल, छिंदवाड़ा, सिवनी तथा नर्मदा का दक्षिणी भाग अंग्रेजों के कब्जे में चला गया।

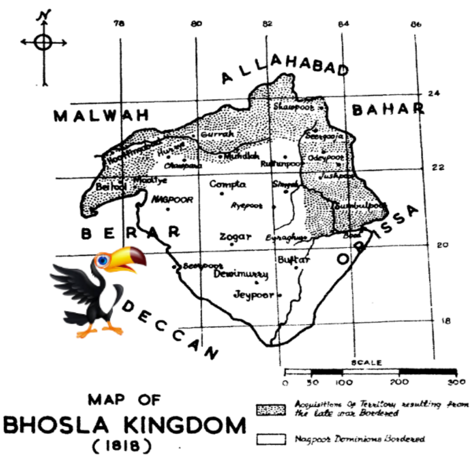

MAP OF BHOSLA KINGDOM (1818)

कुँवर चैनसिंह

कुँवर चैनसिंह की छतरी

कुँवर चैनसिंह ने भी ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध संघर्ष का मार्ग अपनाया और अपने साहस एवं स्वाभिमान के कारण क्षेत्रीय प्रतिरोध के महत्वपूर्ण प्रतीक बने। वे **नरसिंहगढ़ रियासत (राजगढ़)***** के राजा सुभाग सिंह के पुत्र थे, जिससे उन्हें राजनीतिक परिस्थितियों की गहरी समझ प्राप्त हुई। अंग्रेजों से उनका विरोध मुख्यतः **अफीम की खरीद से जुड़े विवादों** तथा दीवान **आनंदराम बख्शी और मंत्री रूपराम बोहरा की दो हत्याओं** की घटनाओं के कारण उत्पन्न हुआ, जिससे उनके और कंपनी प्रशासन के बीच तनाव निरंतर बढ़ता गया। इसी दौरान सीहोर के **पॉलिटिकल एजेंट मैडॉक** ने अपनी शक्ति का विस्तार करते हुये भोपाल, खिलचीपुर और राजगढ़ सहित आसपास के क्षेत्रों पर अधिकार स्थापित कर लिया, जिसके परिणामस्वरूप संघर्ष की स्थिति और अधिक तीव्र तथा निर्णायक बन गई। बढ़ते तनाव और राजनीतिक टकराव के बीच अंततः **24 जून 1824 को सीहोर में कुँवर चैनसिंह और अंग्रेजों के मध्य भीषण युद्ध** हुआ, जिसमें उन्होंने अदम्य वीरता का प्रदर्शन करते हुये **युद्धभूमि में वीरगति** प्राप्त की। इस युद्ध में उनके अंगरक्षकों **हिम्मत खां** एवं **बहादुर खां** का भी महत्वपूर्ण योगदान था। आज भी **सीहोर में स्थित कुँवर चैनसिंह की छतरी***** उनके बलिदान, साहस और औपनिवेशिक सत्ता के विरुद्ध उनके संघर्ष की स्मृति को जीवित रखे हुये है।

1.2 बुंदेला विद्रोह :

> - 1842 के बुन्देला विद्रोह का संक्षिप्त विवरण दीजिये। [MPPSC Civil Main 2016, 6M]
> - बुन्देला विद्रोह । [MPPSC Civil Main 2020, 3M]
> - परीक्षित देव बुंदेला । [MPPSC Civil Main 2024, 2M]

बुन्देला विद्रोह की पृष्ठभूमि 1820 ई. से जुड़ी हुई है, जब अप्पाजी भोसले से प्राप्त भूभाग को मिलाकर **सागर-नर्मदा टेरीटरीज़ का गठन** किया गया और इसे **गवर्नर जनरल के एजेंट द्वारा शासित** क्षेत्र के रूप में व्यवस्थित किया गया। इस सागर-नर्मदा टेरीटरीज़ में सागर, दमोह, जबलपुर (कटनी सहित), होशंगाबाद (हरदा सहित), नरसिंहपुर तथा मण्डला (डिण्डोरी सहित) को सम्मिलित किया गया, जिससे यह एक व्यापक प्रशासनिक इकाई के रूप में स्थापित हुआ। **1842 ई.** में इसी क्षेत्र के **राजाओं, मालगुजारों, जागीरदारों और आम जनता ने** अंग्रेजी शासन के विरुद्ध संगठित होकर जो व्यापक आंदोलन प्रारंभ किया, वही इतिहास में **बुन्देला विद्रोह** के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस विद्रोह में प्रमुख रूप से **बुन्देला, लोधी और गोंड जातियों** की सक्रिय भागीदारी रही, जिससे यह एक सामूहिक और बहुस्तरीय प्रतिरोध बन गया।

कारण

- अंग्रेजी शासन के अंतर्गत **मालगुजारों और तालुकेदारों के अधिकारों का अत्यंत सीमित** कर दिया जाना प्रमुख था, जिससे पारंपरिक प्रभुत्व और स्वायत्तता प्रभावित हुई।
- नई भूराजस्व प्रणाली में विद्यमान विसंगतियाँ और **कठोर प्रशासनिक नीतियाँ** भी असंतोष का कारण बनीं, क्योंकि इनसे स्थानीय समाज और अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा।
- सरकार द्वारा **जमींदारी को दूसरे व्यक्ति को देने पर लगाया गया निषेध** भी पारंपरिक व्यवस्था के विपरीत था, जिससे असंतोष और गहरा हुआ।
- **1836 की सिविल कोर्ट प्रक्रिया** ने न्यायिक हस्तक्षेप को बढ़ाकर स्थानीय स्वायत्तता को सीमित किया, जिससे जनता और सरदारों में रोष उत्पन्न हुआ।
- **शस्त्र रखने पर रोक** और पुलिस की अनुमति के बिना **शस्त्रों की बिक्री पर प्रतिबंध** ने योद्धा परंपराओं को चुनौती दी, जिससे क्षत्रिय और जमींदार वर्ग विशेष रूप से आक्रोशित हुआ।
- इसी समय **आंग्ल-अफ़ग़ान युद्ध में ब्रिटिश सेना की पराजय** ने यह धारणा मजबूत की कि अंग्रेज अजेय नहीं हैं, और इससे विद्रोह के लिये मनोबल प्राप्त हुआ।

© Hornbill classes
+91 78802-71423 Hornbillclasses@gmail.com

CHAPTER 2

1857 की क्रांति एवं मध्यप्रदेश

1857 के संग्राम की पृष्ठभूमि पूर्ववर्ती क्रांतियों से निर्मित हुई थी, क्योंकि **1806 ई. के बेल्लौर विद्रोह**, **1824 ई. के बैरकपुर के सैन्य विद्रोह** तथा **1842 ई. के बुन्देला विद्रोहों** ने क्रमशः उस क्रांतिकारी चेतना का सूत्रपात किया, जो आगे चलकर व्यापक रूप में प्रकट हुई। इन घटनाओं ने भारतीय सैनिकों और जनता के मन में अंग्रेजी शासन के प्रति असंतोष को गहराया और प्रतिरोध की मानसिकता को जन्म दिया।

अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह : काल्पनिक रूपांतरण

1857 के इस विप्लव का तात्कालिक कारण **गाय और सूअर की चर्बी लगे कारतूस** बने, जिनके प्रयोग की बाध्यता ने सैनिकों की **धार्मिक भावनाओं को आहत** किया। इसी क्रम में 10 मई 1857 को मेरठ छावनी में सैनिकों द्वारा विद्रोह किया गया, और इस विद्रोह की ज्वाला शीघ्र ही अन्य क्षेत्रों की भाँति मध्यप्रदेश तक भी पहुँच गई।

तत्कालीन घटनाक्रम

विद्रोह की तैयारी के रूप में चपातियों का वितरण एक महत्वपूर्ण और रहस्यमय घटना के रूप में सामने आया। भारत में यह अफवाह फैली कि प्लासी के युद्ध के ठीक 100 वर्ष बाद, जून 1857 तक अंग्रेजी शासन समाप्त हो जायेगा, जिससे लोगों में नई चेतना जागृत हुई। इस भविष्यवाणी को साकार करने हेतु **अंग्रेजों के विरुद्ध क्रांति की तिथि 31 मई 1857 निर्धारित** की गई। संदेश फैलाने के लिये गाँवों में **चपातियां** तथा सैन्य छावनियों में **लाल कमल के फूल** वितरित किये गये, जिनका प्रारंभ संभवतः बुन्देलखण्ड या नागपुर से माना जाता है। नरसिंहपुर के **डिप्टी कमिश्नर कैप्टन टर्नर** ने सर्वप्रथम सागर-नर्मदा क्षेत्र के कमिश्नर **मेजर जनरल अर्सकाइन***** को चपातियों के वितरण की सूचना दी, जिससे अंग्रेजी प्रशासन सचेत हुआ। टर्नर के शब्दों में - 'यह एक तेजी से आग पकड़ने वाली ऐसी घास है, जो पूरे क्षेत्र के लोगों को आन्दोलित करने के लिये भेजी गई।'

मई 1857 के आरंभ से ही सागर-नर्मदा क्षेत्र में अन्य अफवाहों भी फैल रही थीं। स्वयं **कमिश्नर अर्सकाइन** ने कहा - 'ये कहानियाँ सागर-दमोह एवं जबलपुर में फैल रही हैं कि घी, आटा व शक्कर में सरकार के हुक्मानुसार सुअर व गाय के खून एवं उनकी हड्डियों का चूरा मिलाया गया है ताकि इन्हें खाकर हिन्दु व मुसलमान दोनों का ही धर्म भ्रष्ट हो जाये'। इससे धार्मिक आक्रोश और अधिक बढ़ गया और जनता व सैनिकों में अविश्वास गहराता गया।

29 मार्च 1857 को बैरकपुर में 34वीं पैदल पल्टन के **सिपाही मंगल पाण्डे** ने कारतूसों के प्रयोग से इंकार करते हुये **सार्जेण्ट मेजर ह्यूसन** को गोली मार दी। उन्हें गिरफ्तार कर कोर्ट मार्शल के बाद **8 अप्रैल 1857 को फाँसी** दे दी गई। इस घटना ने भारतीयों में अंग्रेजों के प्रति आक्रोश को बढ़ा दिया। अप्रैल में उत्तर भारत की कई छावनियों में आगजनी हुई और 31 मई को सामूहिक विद्रोह की योजना बनी। मेरठ में 9 मई को गुप्त बैठक के बाद **10 मई 1857** को सैनिकों ने जेल तोड़कर 85 साथियों को मुक्त कराया गया और 11वीं व 20वीं देशी पल्टन ने विद्रोह कर दिया। मेरठ पर कब्जा कर विद्रोही 11 मई को दिल्ली पहुँचे, जहाँ 44वीं पल्टन उनके साथ जुड़ गई और लाल किले में प्रवेश कर **बहादुरशाह जफर को अपना नेता घोषित** किया।

1857 ई. के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के समय मध्यप्रदेश में **सबसे पहले विद्रोह 3 जून 1857*** को नीमच छावनी***** में पैदल और घुड़सवार सैनिकों द्वारा किया गया, जिससे इस क्षेत्र में क्रांति की औपचारिक शुरुआत हुई। किंतु **कर्नल सी.बी. सोबर्स** ने उदयपुर से राजपूत सैनिकों की सहायता लेकर **नीमच के किले और निम्बाहेड़ा पर पुनः कब्जा** कर लिया और नीमच छावनी के विद्रोह को दबा दिया गया।

CHAPTER 3

मध्यप्रदेश में राष्ट्रवाद का उदय

3.1 राष्ट्रवाद के उदय में सहायक परिस्थितियाँ

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भारत में राष्ट्रीय चेतना का उदय मुख्यतः ब्रिटिश शासन के आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक परिवर्तनों से उत्पन्न **शोषण व असंतोष का परिणाम** था। **प्रशासनिक एकरूपता, डाक-तार, रेलवे, छापेखाने और आधुनिक शिक्षा के प्रसार** ने राष्ट्रवाद के विकास हेतु अनुकूल परिस्थितियाँ बनाई। साथ ही राजा राममोहन राय, केशवचन्द्र सेन, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, महादेव गोविंद रानाडे जैसे समाज-सुधारकों के बौद्धिक प्रयासों ने नवचेतना को जन्म दिया। अधिकांश इतिहासकार **1857 की क्रांति को राष्ट्रवाद के उदय का महत्वपूर्ण चरण** मानते हैं, जिसमें बहादुरशाह, नाना साहब, रानी लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे, बेगम ज़ीनत महल और कुँवरसिंह जैसे नेताओं ने भाग लिया तथा जिसका प्रभाव मध्यप्रदेश के सागर-नर्मदा क्षेत्र, नागपुर प्रांत और ग्वालियर, रीवा, इंदौर व भोपाल रियासतों पर भी पड़ा।

> ☘ **मध्यप्रदेश में स्वतंत्रता आंदोलन का वर्णन कीजिए।** [MPPSC Civil Main 2020, 11M]

मध्यप्रदेश में राष्ट्रवाद के उदय की पृष्ठभूमि **प्रशासनिक पुनर्गठन और आधुनिक परिवर्तनों** से जुड़ी हुई थी, क्योंकि **1854** में **बुन्देलखण्ड** एवं **बघेलखण्ड** को **मालवा** में सम्मिलित करके **सेंट्रल इंडिया एजेंसी***** का गठन हुआ। इस एजेंसी का सर्वोच्च अधिकारी **Agent to the Governor-General (AGG)** कहलाता था, जिसका मुख्यालय प्रायः इंदौर में रहता था। साथ ही नवंबर 1861 में सागर-नर्मदा टेरीटरी तथा नागपुर को मिलाकर एक नॉन रेग्यूलेशन प्रान्त के रूप में **मध्यप्रान्त का गठन** किया गया। इस नवगठित प्रांत को नागपुर स्थित **चीफ कमिश्नर** के अधीन रखा गया। इस प्रशासनिक व्यवस्था के अंतर्गत नये प्रांत में **मालगुज़ारी बंदोबस्त लागू** किया गया तथा आधुनिक

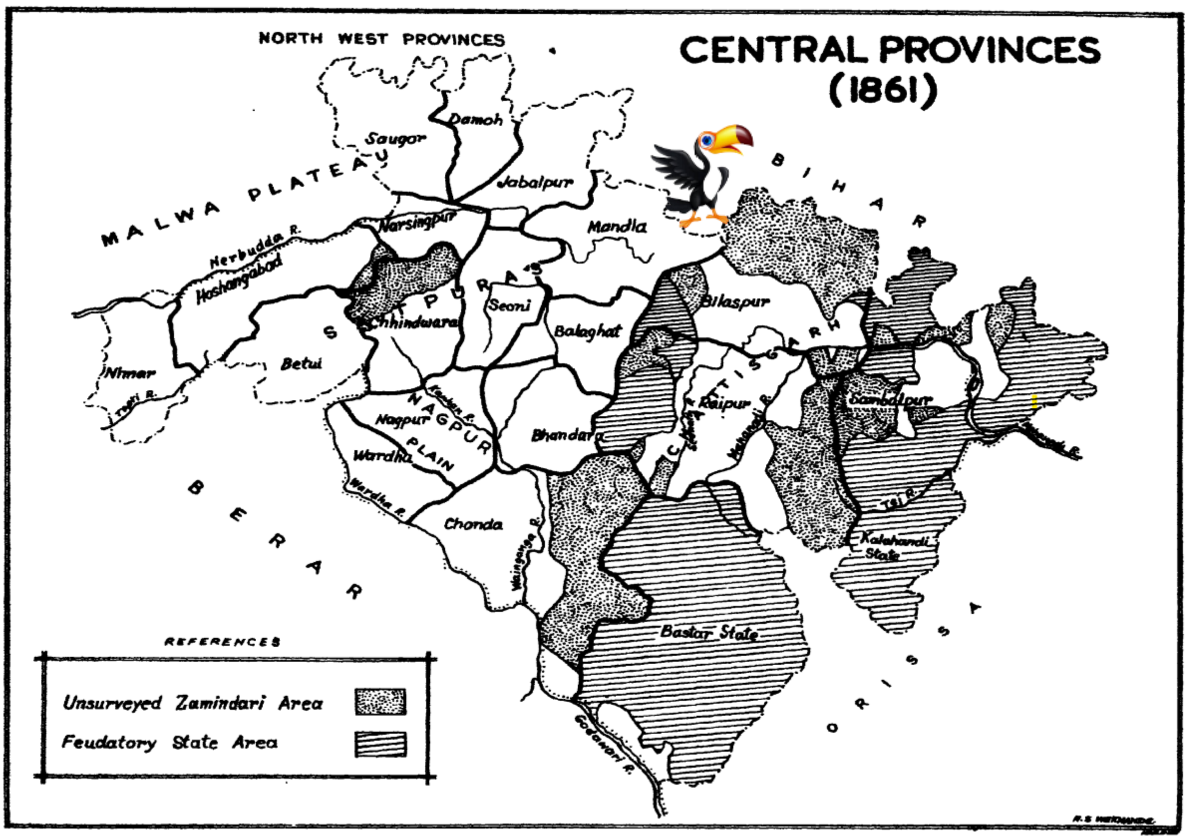

CHAPTER 4

मध्यप्रदेश में स्वाधीनता आंदोलन : प्रथम चरण

सम्पूर्ण भारत सहित मध्यप्रदेश में स्वाधीनता आंदोलन का यह चरण **गाँधीवादी युग** के नाम से जाना जाता है। गांधीजी का भारतीय राजनीति में प्रवेश स्वतंत्रता आंदोलन का महत्वपूर्ण पड़ाव था। उनके आध्यात्मिक सिद्धांतों पर आधारित **सत्याग्रह, अहिंसा और सत्य** ने राजनीति को नया स्वरूप दिया और जनचेतना जगाई। 1915 ई. में दक्षिण अफ्रीका से लौटकर उन्होंने **1917 ई. के चंपारण***** तथा **1918 ई. के खेड़ा***** **और अहमदाबाद***** सत्याग्रह आंदोलनों का सफल नेतृत्व किया। प्रथम विश्वयुद्ध में उन्होंने ब्रिटिश सरकार की सहायता की, जिसके बाद उन्हें **कैसरे-हिन्द की उपाधि** भी मिली।

परन्तु रौलट कानून और जलियाँवाला बाग हत्याकांड ने उन्हें ब्रिटिश सहयोगी से असहयोगी बना दिया। तुर्की संबंधी घटनाओं से उत्पन्न खिलाफत आंदोलन के समानांतर ही उन्होंने असहयोग आंदोलन की योजना बनाई। इलाहाबाद के सवर्दलीय सम्मेलन में इसकी रूपरेखा बनी और काँग्रेस द्वारा सितंबर **1920 ई. में कलकत्ता** में आयोजित **विशेष अधिवेशन** में इसका प्रस्ताव रखा गया। असहयोग आंदोलन के पक्ष में वातावरण तैयार करने के उद्देश्य से गांधीजी ने **कलकत्ता अधिवेशन के पश्चात् देशव्यापी दौरा प्रारम्भ** किया।

मध्यप्रदेश में स्वाधीनता आंदोलन का प्रथम चरण (1920–1940 ईस्वी) भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के व्यापक स्वरूप से गहराई से जुड़ा हुआ था। असहयोग आंदोलन के प्रारंभ के साथ ही मध्यप्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों – **महाकौशल, मालवा, बुंदेलखंड** और **निमाड़** आदि में **राष्ट्रीय चेतना का तीव्र प्रसार** हुआ। रायपुर, जबलपुर, सागर, इंदौर और ग्वालियर जैसे नगर राजनीतिक गतिविधियों के प्रमुख केंद्र बने।

4.1 मध्य प्रदेश में असहयोग आंदोलन

प्रारम्भिक घटनाक्रम

असहयोग आंदोलन : काल्पनिक रूपांतरण

- 1920 ई. में महात्मा गांधी ने रायपुर पहुँच कर **धमतरी के कंडेल ग्राम में नहर कर** के विरुद्ध चल रहे आंदोलन को अपना समर्थन प्रदान किया और स्थानीय मुद्दे को राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़ा। इस सत्याग्रह का स्थानीय नेतृत्व **सुंदरलाल शर्मा**, **नारायणराव मेघवाले** और **छोटेलाल श्रीवास्तव** ने किया। इन्होंने किसानों और आम जनता को संगठित कर अंग्रेजी नीति के विरुद्ध व्यापक प्रतिरोध खड़ा किया। आंदोलन के तीव्र विरोध के परिणामस्वरूप अंग्रेजों को नहर कर माफ करना पड़ा। इस प्रकार यह **मध्यप्रांत में** गांधीजी द्वारा **सत्याग्रह** के प्रयोग का **पहला सफल प्रयास** था।
- दिसंबर 1920 ई. में **नागपुर** में कांग्रेस का **35वाँ अधिवेशन** आयोजित हुआ, जिसकी **अध्यक्षता सी. विजयराघवाचार्य** ने की। इसी अधिवेशन में **असहयोग प्रस्ताव का अनुमोदन** किया गया, जिससे आंदोलन को आधिकारिक दिशा मिली।
- इस प्रकार नागपुर के इस ऐतिहासिक अधिवेशन से कांग्रेस एक ऐसा राजनीतिक दल बन गया जो ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध संघर्ष का पर्याय था। इस अधिवेशन ने कांग्रेस में **गांधीजी** को **निर्विवाद नेता के रूप में स्थापित** कर दिया।
- असहयोग आंदोलन के अंतर्गत कार्यक्रमों में प्रमुख था सरकारी **शिक्षण संस्थाओं का बहिष्कार** तथा राष्ट्रीय विद्यालयों की स्थापना। इसके अंतर्गत आम जनता से अहिंसा, असहयोग तथा उपाधियों, न्यायालयों, एवं पंचायतों आदि के त्याग का आह्वान भी किया गया।

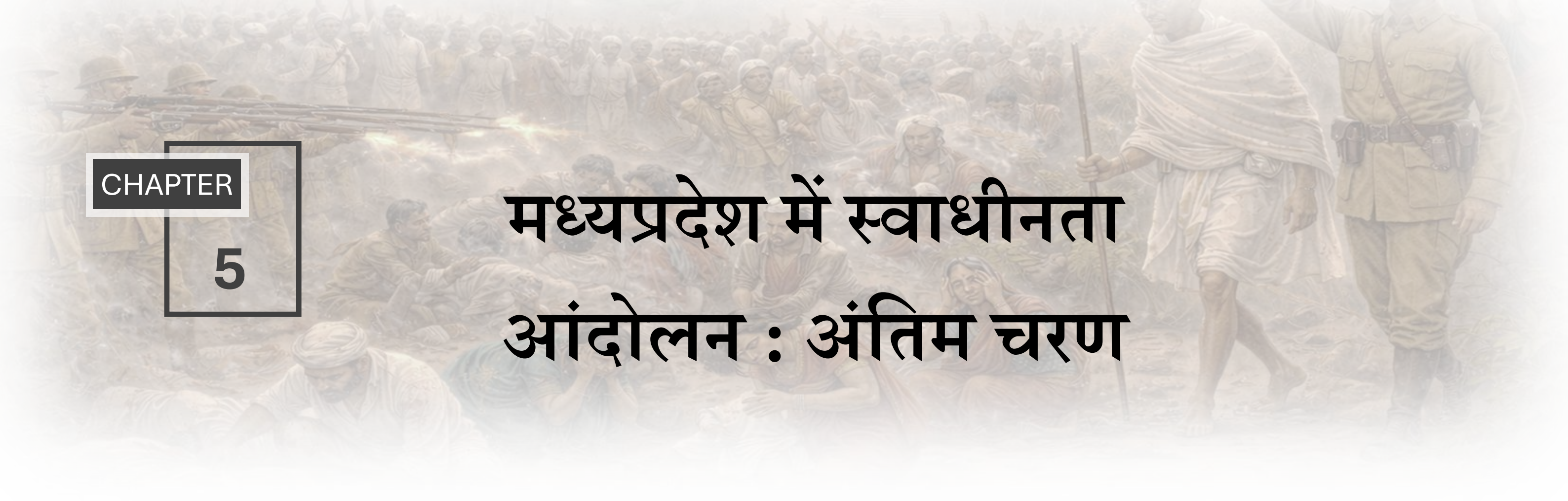

CHAPTER 5

मध्यप्रदेश में स्वाधीनता आंदोलन : अंतिम चरण

मध्यप्रदेश में स्वाधीनता आंदोलन का अंतिम चरण राष्ट्रीय संघर्ष की तीव्रता और जनभागीदारी की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण रहा। 1930 के दशक के उत्तरार्ध से लेकर 1947 तक प्रदेश में स्वतंत्रता की भावना और भी प्रबल होती गई। सविनय अवज्ञा आंदोलन के द्वितीय चरण के दौरान मध्यप्रदेश के अनेक क्षेत्रों में सत्याग्रह, सभायें, जुलूस तथा विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार जैसे कार्यक्रम आयोजित किये गये, जिनमें बड़ी संख्या में जनता ने भाग लिया। इसी काल में घटित **चरण पादुका नरसंहार** ने ब्रिटिश शासन की दमनकारी नीति को उजागर किया और लोगों में अंग्रेजी सत्ता के प्रति गहरा असंतोष उत्पन्न किया।

1939 में जबलपुर के निकट आयोजित **त्रिपुरी अधिवेशन** भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना थी, जिसने राष्ट्रीय आंदोलन की दिशा और रणनीति को प्रभावित किया। इसके बाद महात्मा गांधी के नेतृत्व में **व्यक्तिगत सत्याग्रह (1940)** प्रारंभ हुआ, जिसमें मध्यप्रदेश के कई नेताओं और कार्यकर्ताओं ने भाग लेकर ब्रिटिश शासन का शांतिपूर्ण विरोध किया।

अंततः 1942 के **भारत छोड़ो आंदोलन** ने मध्यप्रदेश में स्वतंत्रता संग्राम को व्यापक जनआंदोलन का स्वरूप दे दिया। इस आंदोलन के दौरान प्रदेश के अनेक स्थानों पर प्रदर्शन, हड़तालें और सरकारी संस्थाओं के विरुद्ध विरोध की घटनायें हुई। इस प्रकार स्वाधीनता आंदोलन का अंतिम चरण मध्यप्रदेश में राष्ट्रीय चेतना, संघर्ष और बलिदान का महत्वपूर्ण अध्याय सिद्ध हुआ, जिसने स्वतंत्रता की प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त किया।

5.1 मध्य प्रदेश में सविनय अवज्ञा : द्वितीय चरण

5 मार्च 1931* को महात्मा गांधी एवं लॉर्ड इरविन के मध्य **गांधी-इरविन समझौता***** संपन्न हुआ। इसके अंतर्गत कांग्रेस ने गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने की सहमति दी और अंग्रेज सरकार ने गांधीजी की कुछ मांगों को स्वीकार किया, जिससे अस्थायी रूप से आंदोलन में विराम आया। इस समझौते के महत्व को व्यक्त करते हुए '**हितवाद**' नामक अखबार ने लिखा कि "गाँधी-इरविन समझौते का राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास में पर्याप्त मनोवैज्ञानिक महत्व है"। किंतु गोलमेज सम्मेलन अंततः असफल सिद्ध हुआ, क्योंकि **सांप्रदायिक मताधिकार के प्रश्न पर सहमति नहीं बन सकी**, और इसके परिणामस्वरूप सविनय अवज्ञा आंदोलन का द्वितीय चरण प्रारंभ किया गया।

- आंदोलन के पुनः प्रारंभ होते ही कांग्रेस के अधिकांश प्रमुख नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया, जिनमें सुभाषचंद्र बोस, जवाहरलाल नेहरू और सरदार वल्लभभाई पटेल प्रमुख थे। **4 जनवरी 1932 को महात्मा गांधी को भी गिरफ्तार** कर लिया गया, जिससे राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक प्रतिक्रिया उत्पन्न हुई।
- प्रांतीय स्तर पर **जबलपुर की मौन सभा** विशेष रूप से उल्लेखनीय रही, क्योंकि जनवरी के प्रारंभ में **तिलक भूमि मैदान** में सेठ गोविंददास, द्वारका प्रसाद मिश्र, ठाकुर लक्ष्मण सिंह चौहान और सुंदरलाल आदि के नेतृत्व में एक सार्वजनिक सभा आयोजित की गई। यह सभा **लगातार तीन दिन तक मौन रूप में** चलती रही और चौथे दिन यह मौन जुलूस में परिवर्तित हो गई, जिससे शांतिपूर्ण विरोध का प्रभावशाली प्रदर्शन हुआ।
- सरकार ने इन गतिविधियों के उत्तर में **कठोर दमनात्मक नीति** अपनाई और अनेक क्रांतिकारियों को कठोर कारावास तथा जुर्माने की सजा दी गई। इसके अंतर्गत सेठ गोन्दिदास एवं पं. द्वारिकाप्रसाद मिश्र को गिरफ्तार करके एक-एक वर्ष का कठोर कारावास तथा 2000 एवं 1500 रुपए जुर्माना किया गया, जबकि ठा. लक्ष्मण सिंह चौहान को 6 माह एवं पं. सुन्दरलाल को 9 माह का कारावास दंड तथा 100 रुपये का जुर्माना किया गया।

मध्य प्रदेश : आधुनिक काल

MCQs

1. भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस इन्दौर शाखा के प्रथम अध्यक्ष कौन थे? [ADPO Exam 2021]
(a) चौधरी दालचन्द राय
(b) सेठ गोविन्द दास
(c) पं. द्वारका प्रसाद मिश्र
(d) अर्जुन लाल सेठी

2. सन् 1942 के आन्दोलन का नेतृत्व दमोह में किसने किया था? [Shakha/Sampada Prabandhak 2021]
(a) श्री रघुवर प्रसाद
(b) श्री कुंजबिहारी गुरु
(c) श्री रघुवीर दयाल मोदी
(d) श्री हरिश्चन्द्र करोठी

3. पंडित द्वारका प्रसाद मिश्र ने स्वतंत्रता आंदोलन में जबलपुर से कौन-सा समाचार-पत्र प्रकाशित किया था? [Shakha/Sampada Prabandhak 2021]
(a) दैनिक भास्कर
(b) अमर उजाला
(c) दैनिक लोकमत
(d) दैनिक जनसत्ता

4. मध्य प्रदेश के वर्तमान डिंडौरी जिले का रामगढ़ गाँव, 1857 के विप्लव के समय विद्रोह का एक केन्द्र था। उस विद्रोह के अगुवा कौन थे? [Shakha/Sampada Prabandhak 2021]
(a) रानी दुर्गावती
(b) रानी अवन्ती बाई
(c) गरूल सिंह
(d) विजय सिंह

5. रानी लक्ष्मी बाई को अंग्रेज़ों से बचाने हेतु उनकी वेशभूषा धारण करने वाली वीरांगना का नाम क्या था ? [DSP (Radio) Exam2021]
(a) मोती बाई
(b) काशी बाई
(c) अवंती बाई
(d) झलकारी बाई

6. किस वर्ष में "झंडा सत्याग्रह" हुआ था? [DSP (Radio) Exam2021]
(a) 1923
(b) 1933
(c) 1928
(d) 1925

7. स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पिता-पुत्र की सही जोड़ी चुनिए। [Medical Officer Exam 2021]
(a) शंकर शाह - भभूत सिंह
(b) शंकर शाह - रघुनाथ शाह
(c) रघुनाथ शाह -माले राव
(d) नाना साहिब - शंकर शाह

8. काँग्रेस के त्रिपुरी अधिवेशन में सुभाष चन्द्र बोस के विरुद्ध अध्यक्ष पद का उम्मीदवार कौन था? [Veterinary Assistant Surgeon 2021]
(a) जे.एल. नेहरू
(b) पट्टाभि सीतारमैय्या
(c) डॉ. राधाकृष्णन
(d) वल्लभभाई पटेल

9. निम्नलिखित में से किस रियासत में 1931 ई. में "चरण पादुका हत्याकांड" हुआ था ? [Veterinary Assistant Surgeon 2021]
(a) छतरपुर
(b) मंडला
(c) रीवा
(d) जैतपुर

10. ठाकुर रणमत सिंह ने स्वतन्त्रता के लिए कहाँ संघर्ष किया ? [Veterinary Assistant Surgeon 2021]
(a) सागर
(b) रीवा
(c) पन्ना
(d) सतना

11. अंग्रेजों ने मंदसौर की संधि किसके साथ की थी ? [State Forest Service Main 2020]
(a) मल्हारराव होल्कर
(b) यशवंतराव होल्कर
(c) तुकोजीराव होल्कर
(d) काशीराव होल्कर

12. स्वतंत्रता संग्राम सेनानी ठाकुर निरंजन सिंह किस क्षेत्र से संबंधित थे? [State Forest Service Main 2020]
(a) मालवा
(b) बघेलखण्ड
(c) भोपाल
(d) महाकोशल

13. 'लोकमत' समाचारपत्र के संपादक कौन थे? [State Forest Service Main 2020]
(a) पं. भवानीप्रसाद मिश्र

45. महाकौशल राजनैतिक परिषद का गठन किसके नेतृत्व में हुआ । [MP Principal Grade - I 2023]

(a) नाथूराम मोदी

(b) ठाकुर लक्ष्मण सिंह

(c) सेठ गोविन्द दास

(d) इनमें से कोई नहीं

46. क्रान्तिवीर मर्दन सिंह का सम्बन्ध कहाँ से था ? [MP State Forest Service Mains 2024]

(a) बानपुर

(b) ओरछा

(c) अजयगढ़

(d) देवगढ़

47. The Evolution of Provincial Finance in British India के लेखक हैं? [Assistant Registrar Exam 2022]

(a) महादेव गोविन्द रानाडे

(b) स्वामी विवेकानन्द

(c) मोहनदास करमचन्द गांधी

(d) डॉ० बी० आर० अम्बेडकर

48. निम्न में से किसके द्वारा सतना में पूर्ण स्वाधीनता दिवस का आयोजन किया गया? [Assistant Research Officer Exam 2024]

(a) रघुवंश प्रताप सिंह

(b) सत्यदेव

(c) श्रीमती शान्ति देवी

(d) विजय सिंह

49. 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान घोड़ा-डोंगरी क्षेत्र से किस आदिवासी नेता ने नेतृत्व किया? [Mining Officer 2024]

(a) महावीर सिंह

(b) रामदीन सिंह

(c) चैन शाह

(d) विष्णु सिंह

50. सन् 1938 में 'दतिया' में प्रजामण्डल की स्थापना किसने की ? [Mining Officer 2024]

(a) दीवान कालका प्रसाद

(b) प्रेम नारायण खरे

(c) मदन गोपाल

(d) प्यारेलाल

Answer Key

1. d	2. a	3. c	4. b	5. d	6. a	7. b	8. b	9. a	10.	11. a	12. d
13. b	14. c	15. c	16. a	17.	18. a	19. a	20. a	21. b	22.	23. a	24. a
25. b	26. a	27. c	28. b	29. c	30. a	31. d	32. d	33. c	34. c	35. a	36. a
37. d	38. b	39. d	40. c	41. a	42. d	43. a	44. b	45. c	46. a	47. d	48. d
49. d	50. a										

INDIAN FOREST SERVICE (IFOS) 2023

AIR 01

Ritvika Pandey
Forestry Comprehensive Course

AIR 03

Swastic Yaduvanshi
Forestry Comprehensive Course

AIR 05

Vidyanshu Shekhar Jha
Forestry Comprehensive Course + Test Series

AIR 06

Rohan Tiwari
Forestry Comprehensive Course

AIR 10

Shashank Bhardwaj
Forestry Comprehensive Course + Test Series

AIR 14

Ankan Bohra
Forestry Comprehensive Course

AIR 16

Prachi Gupta
Forestry Comprehensive Course

AIR 17

Raj Patoliya
Forestry Comprehensive Course + Test Series

AIR 23

Vineet Kumar
Forestry Comprehensive Course

AIR 27

Jatin Babu S
Forestry Comprehensive Course

AIR 28

Gaurav Saharan
Test Series

AIR 37

Yash Singhal
Forestry Comprehensive Course

AIR 41

Nitish Pratik
Forestry Comprehensive Course

AIR 50

Vaasanthi P.
Test Series

AIR 54

Sourabh Kumar Jat
Forestry Comprehensive Course

AIR 56

Ekam Singh
Forestry Comprehensive Course + Test Series

AIR 57

Kunal Mishra
Forestry Comprehensive Course

AIR 58

Atul Tiwari
Forestry Comprehensive Course

AIR 60

Aman Gupta
Forestry Comprehensive Course + Test Series

AIR 61

Sanket Adhao
Forestry Comprehensive Course

AIR 63

Preeti Yadav
Forestry Comprehensive Course

AIR 65

Nihal Chand
Forestry Comprehensive Course + Test Series

AIR 66

Shashikumar S. L.
Forestry Comprehensive Course

AIR 67

Dhino Purushothaman
Forestry Comprehensive Course

AIR 68

Diwakar Swaroop
Forestry Comprehensive Course

AIR 72

Rajesh Kumar
Forestry Comprehensive Course

AIR 74

Krishna Chaitanya
Forestry Comprehensive Course

AIR 75

Harveer Singh Jagarwar
Forestry Comprehensive Course

AIR 76

Akash Dhanaji Kadam
Forestry Comprehensive Course

AIR 78

Himanshu Dwivedi
Forestry Comprehensive Course

AIR 80

Sumit Dhayal
Forestry Comprehensive Course

AIR 82

Priyadarshini
Forestry Comprehensive Course + Test Series

64 Out of **147** Total Selections in

Indian Forest Service (IFoS) 2023

Congratulations

To all our successful candidates in

AIR 01

Kanika Anabh
Forestry Comprehensive Course | Test Series

AIR 03

Anubhav Singh
Forestry Comprehensive Course

AIR 06

Sanskar Vijay
Forestry Comprehensive Course

AIR 10

Satya Prakash
Test Series

AIR 11

Chada Nikhil Reddy
Forestry Comprehensive Course

AIR 12

Bipul Gupta
Forestry Comprehensive Course

AIR 13

Yeduguri Aiswarya Reddy
Forestry Comprehensive Course

AIR 17

Namratha N
Forestry Comprehensive Course

AIR 18

Divyanshu Pal Nagar
Forestry Comprehensive Course

AIR 21

Akanksha Puwar
Forestry Comprehensive Course

AIR 23

Yogesh Rajoriya
Forestry Comprehensive Course

AIR 25

G Prashanth
Forestry Comprehensive Course | Test Series

AIR 28

Kanishak Aggarwal
Forestry Comprehensive Course

AIR 29

Shashi Shekhar
Forestry Comprehensive Course

AIR 31

Vinay Budanur
Forestry Comprehensive Course

AIR 33

Shraddhesh Chandra
Forestry Comprehensive Course | Test Series

AIR 35

Kaore Shreerang Deepak
Forestry Comprehensive Course | Test Series

AIR 36

Javed Ahmad Khan
Forestry Comprehensive Course

AIR 42

Shruti Chaudhary
Forestry Comprehensive Course

AIR 43

Aravindkumar R
Forestry Comprehensive Course

AIR 44

Kishlay Jha
Forestry Comprehensive Course

AIR 45

Prabhutoshan Mishra
Forestry Comprehensive Course

AIR 48

Abhigyan Khaund
Forestry Comprehensive Course

52 Out of **143** Total Selections in

Indian Forest Service (IFoS) 2024

Online / Offline Batches

Comprehensive syllabus coverage and detailed analysis of PYQs

- Both online / Offline batches
- 2 years of validity with unlimited access.

Study Material

- PYQs and syllabus-based
- Color printed
- Generous use of visual Graphics
- Align with the latest trends and requirements of the exam

Test Series

Personalized feedback with detailed solutions and suggestions for each candidate, ensuring targeted improvement and success in exams.

Leader In Forest Services

A premier institute specializing in forest service exams, including IFoS, ACF, RFO, and ICFRE / ICAR–(ASRB) ARS/NET Examinations.